पतञ्जलि विश्वविद्यालय, (हरिद्वार)

पाठ्यक्रम - M.A. - दर्शन

वर्ष- 2025-2026

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पाठ्यक्रम- एम.ए.- (दर्शनशास्त्र)
प्रथम एवं द्वितीय वर्ष
कुल सामान्य नियम एवं प्रस्तावना

- प्रस्तुत पाठ्यक्रम दो वर्ष का होगा, जिसमें चार सत्र होगें।
- प्रत्येक सत्र में चार प्रश्नपत्र होंगे, किन्तु अन्तिम सत्र में पाँचवाँ प्रश्नपत्र वैकल्पिक रूप से लघु शोध प्रबन्ध/निबन्ध परक होगा।
- दो या दो से कम क्रेडिट के पाठ्यक्रम के लिए 50 अंक निर्धारित है। तीन या तीन से अधिक क्रेडिट के पाठ्यक्रम के लिए 100 अंक निर्धारित है।
- प्रत्येक पत्र में 25 अंकों की आन्तरिक एवं 75 अंको की बाह्य परीक्षा होगी।
- परीक्षा का माध्यम इच्छानुसार हिन्दी/संस्कृत/अंग्रेजी होगा।
- प्रत्येक परीक्षा का निर्धारित समय 3 घण्टे होगा।
- परीक्षा में 45% अंक प्राप्त करने वाले छात्र को ही उत्तीर्ण माना जायेगा।

पतंजलि विश्वविद्यालय
UNIVERSITY OF PATANJALI
Patanjali Yog Peeth, Roorkee – Haridwar Road, Haridwar, Uttarakhand 249405

Faculty of Humanities and Ancient Studies

Department of Philosophy

Session 2025-26

MA Darshan

According to NEP-2020,(as per UGC Guidelines for PG Programme)

Semester I

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	MDPHMJ-101	वैदिकसाहित्यम्, सव्यासभाष्यं योगदर्शनम् (समाधिपादः), सब्रह्ममुनिभाष्यं साङ्ख्यदर्शनम् (प्रथमाध्यायः)	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major	MDPHMJ-102	सवात्स्यायनभाष्यं न्यायदर्शनम् (प्रथमपञ्चमाध्यायौ), सप्रशस्तपादभाष्यं वैशेषिकदर्शनम् (प्रथमद्वितीयाध्यायौ)	4	1	0	5
3	Discipline Specific Major	MDPHMJ-103	सब्रह्ममुनिभाष्यं वेदान्तदर्शनम् (प्रथमाध्यायः), शाबरभाष्यं मीमांसादर्शनम् (तर्कपादः)	3	1	0	4
4	Discipline Specific Minor	MDPHMN-104	विविधभारतीयदर्शनम्	3	1	0	4
5	Multi- Disciplinary	MDPHMD-105	संस्कृतव्याकरणम् **-I**	3	1	0	4
6	Yoga Practical (Non Creadit)	MDPHVA-106	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्**-VII**	0	0	12	0
				Total Credits			22

Semester II

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	MDPHMJ-201	सव्यासभाष्यं योगदर्शनम् (साधनपादः), सब्रह्ममुनिभाष्यं साङ्ख्यदर्शनम् (द्वितीयाध्यायः)	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major	MDPHMJ-202	सवात्स्यायनभाष्यं न्यायदर्शनम् (द्वितीयाध्यायः), सप्रशस्तपादभाष्यं वैशेषिकदर्शनम् (तृतीयचतुर्थाध्यायौ)	4	1	0	5
3	Discipline Specific Major	MDPHMJ-203	सब्रह्ममुनिभाष्यं वेदान्तदर्शनम् (द्वितीयाध्यायः)	3	1	0	4
4	Discipline Specific Minor	MDPHMN-204	पाश्चात्यदर्शनम्	3	1	0	4
5	Multi- Disciplinary	MDPHMD-205	संस्कृतव्याकरणम् **–II**	2	0	0	2
6	Reaserch Related Courses/Activities	MDPHRE-206	Research and Publication Ethics	2	0	0	2
7	Yoga Practical (Non Creadit)	MDPHVA-207	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्**-VIII**	0	0	12	0
				Total Credits			22

*** Students who Exit at the End of 1st Year shall be awarded a Postgraduate Diploma.**

Semester III

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	MDPHMJ-301	सव्यासभाष्यं योगदर्शनम् (विभूतिपादः), सब्रह्ममुनिभाष्यं साङ्ख्यदर्शनम् (तृतीयचतुर्थाध्यायौ)	3	1	0	4
2	Discipline Specific Major	MDPHMJ-302	सवात्स्यायनभाष्यं न्यायदर्शनम् (तृतीयाध्यायः), सप्रशस्तपादभाष्यं वैशेषिकदर्शनम् (पञ्चमषष्ठसप्तमाध्यायाः)	3	1	0	4
3	Discipline Specific Major	MDPHMJ-303	सब्रह्ममुनिभाष्यं वेदान्तदर्शनम् (तृतीयाध्यायः), शाब्दबोधमीमांसा	3	1	0	4
4	Discipline Specific Minor	MDPHMN-304	वैदिकसाहित्यम्	3	1	0	4
5	Multi- Disciplinary	MDPHMD-305 (1)	सस्वरवेदपाठः	1	0	2	2
	Multi- Disciplinary	MDPHMD -305 (2)	भारतीयसङ्गीतम्बोधः (गानम्)				
	Multi- Disciplinary	MDPHMD -305 (3)	भारतीयनृत्यबोधः (भरतनाट्यम्)				
	Multi- Disciplinary	MDPHMD -305 (4)	भारतीयनृत्यबोधः (कथकनृत्यम्)				
6	Reaserch Related Courses/Activities	MDPHRE-306	Research Medothology	3	1	0	4
7	Yoga Practical (Non Creadit)	MDPHVA-307	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्-IX	0	0	12	0
				Total Credits			22

Semester IV

S. No.	Course Type	Course Code	Course Title	Credit			
				L	T	P	Total Credits
1	Discipline Specific Major	MDPHMJ-401	सव्यासभाष्यं योगदर्शनम् (कैवल्यपादः), सब्रह्ममुनिभाष्यं साङ्ख्यदर्शनम् (पञ्चमषष्ठाध्यायौ)	4	1	0	5
2	Discipline Specific Major	MDPHMJ-402	सवात्स्यायनभाष्यं न्यायदर्शनम् (चतुर्थाध्यायः), सप्रशस्तपादभाष्यं वैशेषिकदर्शनम् (अष्टमनवमदशमाध्यायाः)	4	1	0	5
3	Discipline Specific Major	MDPHMJ-403	सब्रह्ममुनिभाष्यं वेदान्तदर्शनम् (चतुर्थाध्यायः), अर्थसङ्ग्रहः	3	1	0	4
4	Reaserch Related Courses/Activities	MDPHRE-404	पाण्डुलिपिविज्ञानम्	2	1	2	4
5	Reaserch Related Courses/Activities	MDPHRE-405	Project/Dissertation	0	1	6	4
6	Yoga Practical (Non Creadit)	MDPHVA-406	प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्-X	0	0	12	0
				Total Credits			22

विषय विशेषज्ञा

प्रो. शिवानी वी.
डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक संस्कृत
विश्वविद्यालय, बैंगलुरू

विषय विशेषज्ञ

प्रो. ब्रजभूषण ओझा
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी

विभागाध्यक्षा

प्रो. साध्वी देवप्रिया
दर्शन विभाग
पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

क्रेडिट-05

घण्टे-75

MDPHMJ-101 –वैदिक साहित्यम् एवं सव्यासभाष्ययम् योगदर्शनम् (समाधिपादः) सब्रह्ममुनिभाष्यम् सांख्यदर्शनम् (प्रथमाध्यायः)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- योग एवं सांख्य के मौलिक सिद्धान्तों से अवगत कराना।
- योग व सांख्य के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का सुबोध कराना।
- वेद में प्रतिपादित मुख्य सिद्धान्तों से परिचित करवाना।
- वेद व वेद से सम्बन्धित साहित्य का परिचय कराना।

परिणाम-

- योग एवं साख्यं के मौलिक सिद्धान्तों का परिचय।
- योग व सांख्य के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का गूढ़ परिचय।
- वेद में प्रतिपादित मुख्य सिद्धान्तों से अवगत।
- वेद व वेद से सम्बन्धित सहित्यों का विशेष बोध।

इकाई प्रथम- वैदिक साहित्य का परिचय– **(15 घण्टें)**

विषय - वैदिक साहित्य का परिचय, वेदों की रचना - अपौरुषेय या पौरुषेय (तुलनात्मक अध्ययन), वेदों में बहुदेवतावाद, एकेश्वरवाद (तुलनात्मक अध्ययन), वेद एवं उपनिषदों में सृष्टिरचना विषय।

इकाई द्वितीय- सांख्य दर्शन प्रथम अध्याय (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

विषय- त्रिविधदुःख, दुःख निवृत्ति उपाय, बन्धन का हेतु, 25 तत्त्वों का निरूपण, ज्ञान प्राप्ति हेतु तीन प्रकार के अधिकारी, प्रत्यक्ष, अनुमान व शब्द प्रमाण का निरूपण, प्रकृति एवं पुरुष की सिद्धी, पुरुष का भोगतृत्व, प्रकृति की परार्थता।

इकाई तृतीय- सांख्य दर्शन प्रथम अध्याय (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

विषय- सत्कार्यवाद सिद्धान्त, शरीरादि से भिन्न पुमान्, पुरुष बहुत्व, अद्वैतवाद का खण्डन, साक्षित्व निरूपण, नित्यमुक्तत्व

इकाई चतुर्थ- योग दर्शन समाधिपाद (व्यासभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

विषय- योग का स्वरूप, पञ्चवृत्तियाँ, द्रष्टा का स्वरूप, अभ्यास-वैराग्य, सम्प्रज्ञात व असम्प्रज्ञात समाधि-ईश्वर प्रणिधान, ईश्वर का स्वरूप, चार प्रकार की भावनाएँ, समापत्ति, अध्यात्मप्रसाद, ऋतम्भरा प्रज्ञा, निर्बीज समाधि

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन- (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी, ऋगवेदादिभाष्य भूमिका दयानन्द सरस्वती प्रकाशक आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट।

सहायक ग्रन्थ– भारतीय दर्शन (डॉ० राधा कृष्णन्), भारतीय दर्शन का इतिहास-प्रथम भाग (डॉ० जयदेव वेदालंकार)। सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नई सड़क दिल्ली- 110006), सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्द प्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)।

क्रेडिट-05

MDPHMJ-102 –

घण्टे-75

सवात्स्यायनभाष्यम् न्यायदर्शनम् (प्रथम एवं पंचमाध्यायौ) सप्रशस्तपादभाष्यम् वैशैषिकदर्शनम् (प्रथम एवं द्वितीयाध्यायौ)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- न्याय व वैशेषिक के सिद्धान्तों का अवबोध कराना।
- न्याय व वैशेषिक के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहज रीति से हृदयङ्गम कराना।
- न्याय व वैशेषिक के पदार्थो से अवगत कराना।

परिणाम-

- न्याय व वैशेषिक के सिद्धान्तों का बोध।
- न्याय व वैशेषिक के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहजरीतिबद्ध ज्ञान।
- न्याय व वैशेषिक के पदार्थो का स्वरूपावबोध।

इकाई प्रथम- न्याय दर्शन-1 **(18 घण्टें)**

प्रथम अध्याय (वात्स्यायनभाष्य सहित)

विषय - तर्क पर्यन्त आठ पदार्थों का उद्देश्य व लक्षण निरूपण, दोष, प्रवृति प्रेत्यभाव फल दु:ख निरुपण, तत्वज्ञान-स्वरूप निर्देश, शास्त्र की त्रिविध प्रकृति, प्रत्यक्ष अनुमान-उपमान शब्द लक्षण, आत्मानुमापक हेतुओं की व्याख्या, शरीर इन्द्रिय-भूत, अर्थ व बुद्धि का लक्षण व निरूपण, अपवर्ग लक्षण, मोक्ष में नित्यसुख अभिव्यक्ति का पूर्व पक्ष तथा उसका समाधान, दृष्टान्त सिद्धान्त लक्षणनिरूपण, तर्क की तत्वज्ञानार्थता। पञ्चावयव व विभाग निरूपण, वातजल्पवितण्डा, हेत्वाभास निरूपण, छल लक्षण, छल के भेद, जातिनिग्रहस्थान निरूपण ।

इकाई द्वितीय- पञ्चमाध्याय (वात्स्यायनभाष्य सहित) **(18 घण्टें)**

विषय - 24 प्रकार की जातियों का वर्णन, षट्पक्षी निरूपण, 22 निग्रहस्थान के विभाग इत्यादि।

इकाई तृतीय- वैशेषिक दर्शन प्रथम अध्याय- **(18 घण्टें)**

विषय- धर्म का स्वरूप, द्रव्यादि षट् (द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष समवाय) पदार्थो का तत्वज्ञान नि:श्रेयस का साधन कैसे? गुणों व कर्मो का उद्देश, द्रव्यादि षट्पदार्थो का साधर्म्य-वैधर्म्य से निरूपण, कारण के अभाव से कार्य का अभाव, सत्ता व सत्ता सामान्य का लक्षण, द्रव्यत्व द्रव्य से भिन्न गुणत्व गुणों से भिन्न, कर्मत्व कर्मो से भिन्न है इत्यादि।

इकाई चतुर्थ- वैशेषिक दर्शन द्वितीय अध्याय- **(18 घण्टें)**

विषय- पृथ्वी, जल, तेज व वायु का लक्षण, आकाश में रूपादि गुण का निषेध, परमाणु नित्यत्व, वायु नानात्व, सृष्टि संहार विधि, आकाश का द्रव्यत्व , एकत्व, नित्यत्व । वस्त्र में पुष्पादिगन्ध औपाधिक, उष्णता-तेज में नैसगर्गिक है, शीतता-जल में नैसगर्गिक है, काल द्रव्यत्व, नित्यत्व, एकत्व, दिशा का लक्षण, नित्यत्व, एकत्व, दिक् प्रकरण, शब्द प्रकरण निरूपण।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्याय दर्शन (वात्स्यायनभाष्य सहित) प्रकाशन- चौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं.- 1160 चौक, चित्रा सिनेमा के सामने (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग) वाराणसी-221001, वैशेषिक दर्शन (प्रशस्तपादभाष्य सहित) आनन्द प्रकाश। प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।

सहायक ग्रन्थ- न्यायदर्शन- (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री),

क्रेडिट-04

घण्टे-60

MDPHMJ-103 - सब्रह्ममुनिभाष्यम् वेदांतदर्शनम् (प्रथमाध्यायः) शाबरभाष्यम् मीमांसादर्शनम् (तर्कपादः)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- वेदान्त के मौलिक सिद्धांतों से परिचय कराना।
- वेदान्त के प्रथम अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- मीमांसा के वास्तविक सिद्धान्तों को तर्कपाद से अवगत कराना।
- मीमांसा के धर्मजिज्ञासा, शब्दनित्यत्वादि प्रमुख सिद्धान्तों से परिचित कराना।

परिणाम-

- वेदान्त के मौलिक सिद्धान्तों का विवरण
- वेदान्त प्रथम अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।
- मीमांसा के वास्तविक सिद्धान्तों का तर्कपाद से परिचय।
- धर्मजिज्ञासा, शब्दनित्यत्वादि प्रमुख सिद्धान्तों का परिचय।

इकाई प्रथम- वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र)- प्रथम अध्याय- प्रथमपाद व द्वितीयपाद **(15 घण्टें)**

विषय- ब्रह्मजिज्ञासा, ब्रह्मलक्षण, ब्रह्मसिद्धी में हेतु, परमात्मा की विभिन्न नामों से उपासना, जगदुत्पत्ति में परमात्मा निमित्त कारण, अतृत्व, गुहांप्रविष्टत्व, वैश्वानर आत्मा का विराट् स्वरूप।

इकाई द्वितीय- वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र)- प्रथम अध्याय- तृतीयपाद व चतुर्थपाद **(15 घण्टें)**

विषय- द्युभ्वादि का आयतन, दहरात्मा, जीवात्मा निरूपण, ब्रह्म और जीव में भेद, वेदाध्ययन में सब वर्णों का अधिकार परमात्मा के अधीन प्रकृति उपादान कारण।

इकाई तृतीय- मीमांसा दर्शन- प्रथम अध्याय प्रथम पाद (शाबरभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

विषय- मीमांसा शब्द का अर्थ, धर्म का लक्षण, धर्म, विषयक जिज्ञासा, धर्म का प्रमाण-(वेद)

इकाई चतुर्थ- देहातिरिक्त आत्मा का अस्तित्व, शब्दनित्यत्वावाद। **(15 घण्टें)**

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन- ब्रह्ममुनिभाष्य सहित प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), वेदान्त दर्शन- ब्रह्ममुनिभाष्य सहित प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा) मीमांसादर्शन (शाबरभाष्य सहित) प्रकाशक- युधिष्ठिर मीमांसक, बहालगढ़, जिला- सोनीपत, हरियाणा।

सहायक ग्रन्थ- वेदान्त दर्शन- ब्रह्ममुनिभाष्य (विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006), । शाबरभाष्य व्याख्या -पं. युधिष्ठिर मीमांसक, मीमांसापरिभाषा, अर्थसंग्रह- (लौगाक्षि भास्कर)।

MDPHMN-104 – विविधभारतीयदर्शनम् क्रेडिट-04

घण्टे-60

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- समकालीन प्रमुख भारतीय दार्शनिकों से विद्यार्थियों का परिचय करवाना।
- समकालीन दार्शनिक चिन्तन एवं प्रमुख अवधारणाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
- चार्वाक दर्शन के मूल सिद्धान्तों व विचारों के प्रति सहज बोध करवाना।
- जैन दर्शन के दार्शनिक सिद्धान्तों से छात्रों का परिचय कराना।
- बौद्ध दर्शन की मूल मान्यताओं, सम्प्रदायों व उपदेशों से परिचित कराना।

परिणाम:-

- विद्यार्थी समकालीन भारतीय दार्शनिकों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेगें जिससे उनके दार्शनिक एवं वैचारिक विकास संभव हो सकेगा।
- विद्यार्थी यह समझने में समर्थ हो सकेंगे कि दार्शनिक विचारधारा किस प्रकार व्यक्तित्व निर्माण राष्ट्रीय राजनीति एवं सामाजिक संरचना को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।
- वैदिकेतर दर्शन से विद्यार्थियों का परिचय होगा।
- वैदिक और वैदिकेतर दर्शन का तुलनात्मक विश्लेषण करने का अवसर प्राप्त होगा।

भारतीय वैदिकेत्तर दर्शन

इकाई प्रथम- चार्वाक - ज्ञान मीमांसा, तत्व मीमांसा, नीति मीमांसा **(15 घण्टें)**

इकाई द्वितीय- जैन दर्शन - द्रव्य विचार, प्रमाण मीमांसा, स्यादवाद, बन्धन एवं कैवल्य, महाव्रत एवं त्रिरत्न **(15 घण्टें)**

इकाई तृतीय- बौद्ध दर्शन - चार आर्य सत्य, अनात्मवाद, क्षणिकवाद, महायान-हीनयान **(15 घण्टें)**

समकालीन भारतीय दर्शन **(15 घण्टें)**

इकाई चतुर्थ- **स्वामी विवेकानन्द:-** जीवन परिचय, सत् एवं ईश्वर, ईश्वर के अस्तित्व की सिद्धि, मानव का स्वरूप, कर्म एवं स्वतन्त्रता, धर्म सम्बन्धित विचार।

रवीन्द्रनाथ टैगोर:- सत् एवं ईश्वर की सिद्धि के प्रमाण, आत्मा एवं शरीर, अशुभ की समस्या, मानववाद।

श्री अरविन्द:- शुद्ध सत्, चित्त शक्ति, आनन्द, पुनर्जन्म एवं कर्म सिद्धान्त, अज्ञान एवं अज्ञान के सप्तरूप, विविध रूपान्तरण, अति मानव की अवधारणा, पूर्ण अद्वैत योग।

राधा कृष्णन:- परम सत्, आत्म-स्वरूप, धार्मिक अनुभूति, अन्तर्दृष्टि।

योगऋषि स्वामी रामदेव-योग, योगमुक्त, आयुर्वेद

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- समकालीन भारतीय दर्शन लेखक-बंसतन्त कुमार लाल प्रकाशक-मोतीलाल बनारसीदास।, सर्वदर्शन संग्रह, प्रो. उमाशंकर शर्मा (ऋषि) प्रकाशक-चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

MDPHMD-105 संस्कृतव्याकरणम् I

क्रेडिट-04

घण्टे-60

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण के मूलभूत सिद्धांतों का ज्ञान कराना।
- संधि, समास, कारक, लिंग, वचन, वाक्य-विन्यास आदि व्याकरणिक तत्वों की समझ विकसित करना।
- शुद्ध संस्कृत भाषा लेखन और उच्चारण की क्षमता बढ़ाना।
- शब्दरूप और धातुरूपों का अभ्यास कराकर भाषा में शुद्धता लाना।
- संस्कृत वाक्यों का विश्लेषण एवं निर्माण करने में दक्षता प्राप्त करना।
- संस्कृत भाषा के प्रति रुचि एवं सम्मान उत्पन्न करना।

परिणाम

- छात्र संस्कृत व्याकरण की मौलिक एवं उन्नत अवधारणाओं का गहन अध्ययन कर सकेंगे।
- वे पाणिनीय व्याकरण की दृष्टि से संधि, समास, प्रत्यय, विभक्ति, धातु आदि की संरचना एवं सिद्धांतों का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- छात्र शास्त्रीय ग्रंथों की भाषा एवं व्याकरणिक शुद्धता को पहचानने और उसका समीक्षात्मक अध्ययन करने में दक्ष होंगे।
- छात्र संस्कृत वाक्यों का व्याकरणिक विश्लेषण, रूपविचार तथा प्रयोगात्मक व्याख्या करने में सक्षम होंगे।
- अनुसंधान हेतु वे मूल ग्रंथों का शुद्ध पाठ, अनुवाद, व्याकरणिक विवेचन एवं टीका लेखन कर सकेंगे।

इकाई प्रथम- शिक्षाप्रकरणम् - वर्णमाला परिचयः,वर्णोच्चारणम्,प्रयत्नविचारः(आभ्यन्तर,बाह्य) **(15 घण्टें)**

इकाई द्वितीय- संज्ञाप्रकरणम्- प्रत्याहारः, वृद्धिः, गुणः, संयोगः,सवर्ण, प्रगृह्य,अव्ययं,सम्प्रसारणं, उपधा, अपृक्त,नदी,प्रातिपदिक,निपातः, उपसर्गः, कर्मप्रवचनीय, विभक्तिः, सम्बद्धः, सार्वधातुक आर्धाधातुक संज्ञा। **(15 घण्टें)**

इकाई तृतीय- पारिभाषि एवं संहिताप्रकरणम् - पारिभाषिकप्रभेदाः, अज्सन्धि, हल्सन्धिः, विसर्गसन्धिः। **(15 घण्टें)**

इकाई चतुर्थ- शब्दरूपाणि धातुरूपाणि -रामः रमा, पुस्तकाम् भूः,कृ,पठ्,गम्। **(15 घण्टें)**

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- व्याकरण चन्द्रोदय-1, लेखक-डॉ.आचार्या साध्वी देवप्रिया प्रकाशक-दिव्य प्रकाशन, हरिद्वार।
सहायक ग्रन्थ- लघु सिद्धान्त कौमुदी चौखम्बा

MDPHVA-106 प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्-VII घण्टें-180

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Unit-1: Basic Preparatory Asanas

Sukshma Yogic vyayam, Sthula Vyayam, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar

Unit-2: Asanas (15)

Swastikasan, Gaumukhasan, Veerasan, Kurmasan, Kukkutasan, Uttan Kurmasan, Dhanurasan, Ardha Matsyendrasan, Paschimottanasan, Mayurasan, Shavasan, Siddhasan, Padmasan, Simhasan, Bhadrasan

Unit-3: Advance Yogasanas (10)

Sheershasan, Vrishchikasan, Bhunamanasan, Hanumanasan, Sarvangasan, Paripurna Matsyasan, Halasan, Purna Dhanurasan, Purna Chakrasan, Purna Natarajasan, Mayurasan

Unit-4: Shatkarma (Shuddhi Kriya)

Jalneti, Sutra Neti (Rubberneti), Vamana Dhauti / Kunjar Kriya, Vatkram Kapalbhati

Unit-3: Pranayam, Bandha, Mudra & Meditation

Nadi Shodhan Pranayam, Suryabhedan Pranayam, Ujjayi, Bhastrika,Bhramari, Shitali, Seetkari pranayama
Mudra & Bandha: Mahamudra, Mahabandh, Mahavedha, Uddiyan Bandh, Jalandhar Bandh, Moola bandh, Viparitkarni Mudra

Meditation: Sthula, Jyoti & Sukshma Meditation

Viva: Ishwar Stuti Prarthnopasana

Text Book: -

1) Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
2) Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
3) Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

Reference Book: -

1) Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.
2) Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.
3) Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.
4) Sahay G.S., (2023), Hatha Pradipika of Swatmaram. Chaukhamba publication

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

एम.ए. दर्शन

प्रथम वर्ष (द्वितीय सेमेस्टर)

क्रेडिट-05

घण्टे-75

MDPHMJ-201 - सव्यासभाष्यं योगदर्शनम् (साधनपादः), सब्रह्ममुनिभाष्यं सांख्यदर्शनम् (द्वितीयाध्यायः)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- सांख्य व योग के मौलिक सिद्धांतों का परिचय कराना।
- सांख्य के द्वितीय अध्याय व योग के साधनपाद के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ को सहजता से हृदयङ्गम कराना।
- सम्पूर्ण सांख्यकारिका के अर्थ एवं भाष्य को सरलतम विधा से अवगत कराना।

परिणाम-

- सांख्य व योग के मौलिक सिद्धान्तों का विवरण।
- सांख्य के द्वितीय अध्याय व योग के साधनपाद के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का ज्ञान।
- सांख्यकारिका के अर्थ व भाष्य का बोध।

इकाई प्रथम- सांख्यदर्शन द्वितीय अध्याय (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(18 घण्टें)**

विषय- बहुश्रुत महिमा, सृष्टि प्रयोजन, महतत्व के लक्षण का कथन, अहंकार लक्षण, अहंकार कार्य, इन्द्रियों के भौतिकत्व का खण्डन, ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों के विषयों का कथन, बुद्धि की प्रधानता।

इकाई द्वितीय- सांख्यकारिका - 01 से 72 तक (गौडपाद भाष्य सहित) **(18 घण्टें)**

विषय- सांख्य प्रतिपादित ज्ञान की उपादेयता, प्रमेयभूत 25 तत्वों का परिचय, त्रिविध प्रमाणों का निरुपण, विद्यमान पदार्थ की उपलब्धि व अनुपलब्धि में हेतु, गुणों का स्वरूप निरुपण, पुरुष बहुत्वम्, द्विविधा सृष्टि, बुद्धि का प्राधन्य

इकाई तृतीय- सांख्यकारिका **(18 घण्टें)**

विषय- सूक्ष्म शरीर निरूपण, बुद्धि सर्ग निरूपण, 28 अशक्ति, नवधा तुष्टि व आठ प्रकार की सिद्धियों का वर्णन, पुरुष के मोक्ष के लिए प्रकृति की प्रवृति, तत्वाभास से ज्ञानोदय, सम्यक ज्ञान से मुक्ति।

इकाई चतुर्थ- योग दर्शन साधनपाद, व्यासभाष्य सहित **(18 घण्टें)**

विषय- क्रियायोग, पञ्च क्लेश, अविधा का स्वरूप, दृश्य व दृष्टा का स्वरूप, हेय-हेयहेतु, हान- हानोपाय, अष्टाङ्ग योग एवं उसका फल, प्राणायाम निरूपण, प्रत्याहार निरूपण इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-

सांख्यदर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, सांख्यकारिका (गौडपाद भाष्य सहित) प्रकाशक- 41 यू.ए. बंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-110007, अशोक राजपथ, पटना-800004 एवं चौक, वाराणसी-221001,पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी।

सहायक ग्रन्थ- सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नई सड़क दिल्ली- 110006), सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्दप्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)।

MDPHMJ-202 - सवात्स्यानभाष्यं न्यायदर्शनम् (द्वितीयाध्यायः), सप्रशस्तपादभाष्यं वैशैषिकदर्शनम् (तृतीयचतुर्थाध्यायौ)

क्रेडिट–05

घण्टे–75

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- न्याय व वैशेषिक के मौलिक सिद्धांतों से परिचित कराना।
- न्याय के द्वितीय अध्याय व वैशेषिक के चतुर्थ एवं पञ्चम अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ को सरलतम रीति से अवबोध कराना।

परिणाम-

- न्याय व वैशेषिक के मोलिक सिद्धान्तों का विवरण।
- न्याय के द्वितीय अध्याय व वैशेषिक के चतुर्थ एवं पञ्चम अध्याय का सुविस्तार परिचय।

इकाई प्रथम- न्याय दर्शन **(18 घण्टें)**

द्वितीय अध्याय- वात्स्यायनभाष्य सहित।

विषय- संशय का लक्षण एवं परीक्षा, प्रमाण सामान्य परीक्षा प्रकरण, प्रत्यक्ष परीक्षा प्रकरण, अनुमान परीक्षा प्रकरण, शब्द सामान्य परीक्षा प्रकरण, शब्द विशेष परीक्षा प्रकरण

इकाई द्वितीय- प्रमाण चतुष्ट्य की उत्पत्ति, व्यक्ति, शब्द, अनित्यत्ववाद आकृति, जाति पदार्थवाद का निरूपण। **(18 घण्टें)**

इकाई तृतीय- वैशेषिक दर्शन- तृतीय व चतुर्थ अध्याय- (प्रशस्तपादभाष्य सहित) । **(18 घण्टें)**

विषय- इन्द्रियों के विषय, ज्ञानादिगुण-भौतिक देह के नहीं, हेत्वाभासों का निर्देश, मन की सिद्धि, आत्मा का लक्षण, आत्मा केवल आगमबोध्य नहीं, आत्मप्रकरण,

इकाई चतुर्थ- वैशेषिक दर्शन- कारण से कार्य का अनुमान, मूल उपादान को अनित्य कहना अज्ञान है, गुणों का प्रत्यक्ष, गुण वैधर्म्यप्रकरण, रूप, रस गन्ध स्पर्श प्रकरण योनिज व अयोनिज दो प्रकार के शरीर, पृथ्वी के कार्य के भेद । **(18 घण्टें)**

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्यायदर्शन, वात्स्यायनभाष्य सहित प्रकाशन- चौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं.- 1160 चौक, चित्रा सिनेमा के सामने (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग) वाराणसी-221001, वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश। प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।

सहायक ग्रन्थ- न्यायदर्शन- (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), न्याय दर्शन (डॉ० राधाकृष्णन्)

क्रेडिट–04

घण्टे–60

MDPHMJ-203 - सब्रह्ममुनिभाष्यं वेदांतदर्शनम् (द्वितीयाध्यायः)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- वेदान्तदर्शन के द्वितीय अध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका प्रमुख सिद्धान्तों का हृदयङ्गम कराना।
- वेदान्त के मौलिक सिद्धान्तों से इतर सिद्धान्तों का तुलनात्मक परिचय करवाना।

परिणाम–

- वेदान्तदर्शन के द्वितीय अध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का ज्ञान।
- ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के कतिपय प्रमुख सिद्धान्तों का बोध।
- वेदांत के सिद्धान्तों एवं अन्य सिद्धान्तों का तुलनात्मक ज्ञान।

इकाई प्रथम- **वेदान्त दर्शन** (ब्रह्मसूत्र) द्वितीय अध्याय – प्रथमपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

विषय– जगत् की उत्पत्ति में भिन्न–भिन्न स्मृति–शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित परमात्मा और प्रकृति का निमित्त और उपादान के भेद से उभय कारणवाद। जीवात्माओं का जगत् के कारण होने में निषेध, उनके कर्मों की विविधता जगत् के कारण होने के कारण। प्रकृति नामक अवयक्त से जगत् की अभिन्नता। परमात्मा में हाथ आदि करणों की अनपेक्षा और प्रकृति में आकाश दिशा देश काल आदि सब साधनवत्ता।

इकाई द्वितीय- **वेदान्त दर्शन** (ब्रह्मसूत्र) द्वितीय अध्याय द्वितीयपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

विषय- जगत् की उत्पत्ति में केवल जड़प्रकृति का तथा जड़रूप परमाणुओं के कारणवाद का निराकरण, क्षणिक अनैकान्तिक विज्ञानवादों का खण्डन, साकार ईश्वरवाद की अयुक्ता, जगत् के स्वपनवत् मायावाद का खण्डन।

इकाई तृतीय- **वेदान्त दर्शन** (ब्रह्मसूत्र) द्वितीय अध्याय तृतीयपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

विषय- आकाश आदि भूतों मन और इन्द्रियों की उत्पत्ति और लय का क्रम, जीवात्मा उत्पत्तिधर्मरहित, नित्य, चेतन, अल्पज्ञ, अणु, कर्मकर्ता और भोक्ता।

इकाई चतुर्थ- **वेदान्त दर्शन** (ब्रह्मसूत्र) द्वितीय अध्याय चतुर्थपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

विषय- शरीर में प्राणों और इन्द्रियों की उत्पत्ति भी ईश्वरकृत, मुख्यप्राण की इन्द्रियों से भिन्नता और दोनों का आत्मा के साधन होना, भूतों का परिणाम शरीर, उस में आधिक्य से उसका वैसा नाम।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र), (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित)प्रकाशक– माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र) आचार्य उदयवीर शास्त्री।

MDPHMN-204 - पाश्चात्यदर्शनम्

क्रेडिट-04

घण्टे-60

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- विद्यार्थियों को ग्रीक दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों का ज्ञान कराना।
- प्राचीन पाश्चात्य दार्शनिकों के वैचारिक मत एवं सिद्धान्तों को जानना।
- बुद्धिवादी, अनुभववादी एवं समीक्षात्मक दर्शन का तुलनात्मक परिचय व ज्ञान मीमांसीय, तत्व मीमांसीय एवं आचार मीमांसीय बोध कराना।
- पाश्चात्य दर्शन के इतिहास को भलीभांति जानना।

परिणाम-

- ग्रीक दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों का विवरण।
- प्राचीन पाश्चात्य दार्शनिकों के वैचारिक सिद्धान्तों की विद्यार्थियों को जानकारी प्राप्त होगी।
- बुद्धिवादी एवं अनुभववादी चिन्तकों व दार्शनिकों का परिचय व सिद्धान्तों का विवरण प्राप्त होगा।
- भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के बारे में तुलनात्मक चिंतन विकसित होगा।

इकाई प्रथम- ग्रीक दर्शन-सुकरात पूर्व दार्शनिक- थेलीज, एनिक्जमेंडर, एनेक्जिमेनीज, पाइथागोरस, हेरेक्लाइटस, पार्मेनाइडीज, सोफिस्ट।

सुकरात- दार्शनिक समस्या, दार्शनिक पद्धति, ज्ञान का सिद्धान्त, नैतिक दर्शन।

प्लेटो- ज्ञान मीमांसा, प्रत्यय सिद्धान्त, द्वन्द्वात्मक पद्धति, ईश्वरीय विचार, सृष्टि विज्ञान।

अरस्तु- विज्ञान और दर्शन, तत्व मीमांसा, द्रव्य एक स्वरूप, कारणता का सिद्धान्त, ईश्वर की धारणा। **(15 घण्टें)**

इकाई द्वितीय- आधुनिक दर्शन (बुद्धिवाद)

रेने देकार्त- संदेह विधि, द्रव्य विचार, आत्मा का विचार, क्रिया-प्रतिक्रियावाद का सिद्धांत, ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण, जगत की अवधारणा।

स्पिनोजा- द्रव्य विचार, गुण प्रर्याय, सर्वेशवरवाद, समानान्तरवाद का सिद्धांत।

लाइबनित्ज- चिद्बिन्दुओं का सिद्धान्त, पूर्वस्थापित सामंजस्य का सिद्धांत, ईश्वर का स्वरूप। **(15 घण्टें)**

इकाई तृतीय- (अनुभववाद)

जॉन लॉक- जन्मजात प्रत्ययों का खण्डन, द्रव्य विचार, प्राथमिक एवं गौण गुण ज्ञान मीमांसा

बर्कले- जड़वाद की आलोचना, आत्मगत प्रत्ययवाद, ज्ञान मीमांसा

ह्यूम- द्रव्यविचार, कारण-कार्य सिद्धांत, संशयवाद **(15 घण्टें)**

इकाई चतुर्थ - कान्ट- (समीक्षावाद)

विश्लेषणात्मक एवं संशलेषणात्मक कथन, पूर्वानुभविक व उत्तरानुभविक निर्णय, शुद्ध बुद्धि की अवधारणा, बुद्धि की कोटिया, देश-काल का विचार, अज्ञेयवाद। **(15 घण्टें)**

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- पाश्चात्य एवं आधुनिक दर्शन का वैज्ञानिक इतिहास-डॉ जगदीश सहाय श्रीवास्तव, प्रकाशन-किताब महल, 22 ए, सरोजिनी नायडु मार्ग, प्रयाग राज।

पाश्चात्य दर्शन- चन्द्रधर शर्मा। प्रकाशक- मोतीलाल, बनारसीदास, 41 यू.ए. बंग्लो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली 110007, चौक, वाराणसी, 221001, अशोक राजपथ, पटना- 800004

MDPHMD-205 - संस्कृतव्याकरणम् II

क्रेडिट-02

घण्टे-30

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- छात्रों को संस्कृत व्याकरण के प्रमुख अंशों — कारक, विभक्ति तथा समास — का गहन ज्ञान प्रदान करना।
- विभक्तियों के प्रयोग विशेषकर उपपदविभक्ति की प्रयोगगत समझ विकसित करना।
- समासों के विभिन्न प्रकारों (अन्यर्थीभाव, तत्पुरुष, कर्मधारय, बहुव्रीहि, द्वंद्व, एकदेश, अलुक् समास) की शास्त्रीय परिभाषा, भेद और प्रयोग को स्पष्ट करना।
- छात्रों में शुद्ध संस्कृत वाक्य रचना, व्याकरणिक विश्लेषण और अनुवाद कौशल का विकास करना।
- संस्कृत व्याकरण की पारंपरिक प्रणाली को आधुनिक शिक्षण पद्धतियों से जोड़कर प्रस्तुत करना।

परिणाम

- छात्र सप्त कारकों का शुद्ध प्रयोग एवं अर्थ-समझ सकेंगे तथा वाक्य निर्माण में उनका उचित प्रयोग कर पाएँगे।
- उपपदविभक्ति का शास्त्रीय आधार और प्रयोगात्मक स्वरूप स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।
- विभिन्न समासों की पहचान, रचना एवं विश्लेषण करने में दक्षता प्राप्त होगी।
- शास्त्रीय ग्रंथों में प्रयुक्त व्याकरणिक रचनाओं का विश्लेषण एवं टीकात्मक व्याख्या करने की क्षमता विकसित होगी।
- छात्र शुद्ध संस्कृत लेखन, पठन और अनुवाद में व्याकरणिक त्रुटियों से मुक्त हो सकेंगे।
- यह पाठ्यक्रम शोध एवं उच्च शिक्षा हेतु व्याकरणिक विवेक और भाषा संबंधी गहनता को पुष्ट करेगा।

इकाई प्रथम- कारकप्रकरणम् **(7 घण्टें)**

कारकविभक्तयः (कारक, प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्टी, सप्तमी)

इकाई द्वितीय- उपपद विभक्तिः **(7 घण्टें)**

प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्टी, सप्तमी

इकाई तृतीय- समास प्रकारणम 1 **(7 घण्टें)**

अव्ययीभाव, तत्पुरूष (प्रकार), कर्मधारय (प्रभेद)

इकाई चतुर्थ- समास प्रकारणम 2 **(7 घण्टें)**

बहुव्रीहि, द्वन्द्व, एकशेष, अलुक्-समास

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- व्याकरण चन्द्रोदय-2, लेखक-डॉ.आचार्या साध्वी देवप्रिया
प्रकाशक-दिव्य प्रकाशन, हरिद्वार।

MDPHRE-206 - Research and Publication Ethics

क्रेडिट–02
घण्टे–30

Objectives :-

1. To aware about concept of ethics in research and publication
2. To impart knowledge on ethics in research philosophy and publication

Outcomes :-

1. Research quality will be original and authentic.
2. Researchers will be able to inculcate some scientific values in her/his research work.

Unit-I (15 Hours)

1. Meaning of Research Ethics and moral values.
2. Free will and field/area of researchers
3. Copyright : Various aspects of legal rights in printing and digital writings.
4. Plagiarism : Parameters and norms for using related research as references.

Unit-II (15 Hours)

1. Publication Ethics : Authorship, plagiarism checking, data and facts related future impacts in society.

Reference Book-Research and Publication Ethics , Writer- Dr. Upedra Pratap Singh, Ms.Sakshi Ahlawat, Dr. Sushma Sharma Publishers-Sultan Chand sons New Delhi

MDPHVA-207 प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्-VIII घण्टें–180

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Basic Preparatory Asanas

Sukshma Yogic vyayam, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar

Asan

Sidhdasana, Padmasana, Bhadrasana, Muktasana,Vajrasana,Swastikasana, Simhasana, Gomukhasana, Veerasana, Dhanurasana, Mritasana, Guptasana, Matsyasana, Matsyendrasana, Gorakshasana, Paschimottanasana, Utakasana, Sankatasana, Mayurasana, Kukkuttasana, Kurmasana, Uttanakurmasana, Mandukasana, Uttana mandukasana Vrikshasana, Garudasana, Shalbhasana, Makarasana, Ushtrasana, Bhujangasana, Yogasana

Advance yogasan:

Padma Sarvangasana, Ekpaadskandha Asana, Tolangulasana, Vatayanasana, Tittibhasana, Garbhasana, Shirsha Padangushthasan, Guptasana,Vibhakta Paschimottanasan, Padmabakasan, Ek Paad Rajakapotasan, Purna Ustrasana

Pranayama:

Sahit Pranaym, Suryabhed, Ujjayi, Sheetali, Bhastrika & Bhramari Pranayam, Bahya Aabhyantar Vritti, Stambha Vritti and all practices of previous semester.

Shatkarma:

Sutraneti, Agnisara, Sheetkram and Vyutkram (Inverse) Kapalbhati and all the practices of previous semester.

Mudra and Bandha

Nabho Mudra, Yoni Mudra, Tadagi Mudra, Shambhavi Mudra, Ashwini Mudra, Pashini Mudra, Kaki Mudra & all practices of previous semester.

Mantra & Meditation:

Devyajna Mantras- Meaning, Memorization & Recitation

Text Book: -

1) Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.

2) Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan

3) Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

Reference Book: -

1) Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.

2) Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.

3) Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.

4) Saraswati N., (), Gherand Samhita. Yoga Publication Trust, Bihar

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

क्रेडिट-04

घण्टे-60

एम.ए. दर्शन

द्वितीय वर्ष (तृतीय सेमेस्टर)

MDPHMJ-301 - सव्यासभाष्यं योगदर्शनम् (विभूतिपादः), सब्रह्ममुनिभाष्यं सांख्यदर्शनम् (तृतीयचतुर्थाध्यायौ)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- सांख्यदर्शन के वैराग्याध्याय व आख्यायिकाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का बोध कराना।
- योग दर्शन के विभूतिपाद के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।

परिणाम-

- सांख्यदर्शन के वैराग्याध्याय व आख्यायिकाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का बोध।
- योगदर्शन के विभूतिपाद के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का विस्तृत ज्ञान।
- सांख्यदर्शन व योगदर्शन के सूत्रों का विवरण।

इकाई प्रथम- सांख्य दर्शन-तृतीय अध्याय- (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

विषय- महाभूत उत्पत्ति, संसारावधि का वर्णन, दो प्रकार के शरीरों का वर्णन, लिङ्ग शरीर व्यापारवर्णन, ज्ञान से मोक्ष प्राप्ति, ज्ञान साधनों का वर्णन।

इकाई द्वितीय- प्रधान सृष्टि का प्रयोजन, पुरुष में बन्धन व मोक्ष का आरोप अवास्तिविक, विवेक से कृत्यकृत्यता ।

(15 घण्टें)

इकाई तृतीय- सांख्य दर्शन- चतुर्थ अध्याय- (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

तत्वोपदेशाद् विवेकराजपुत्राख्यायिका, पिशाचाख्यायिका, परिग्रहदुःखे श्येनाख्यायिका विवेकासाधनचिन्तने बन्ध इत्यत्र भरताख्यायिका, नैराश्ये सुखमित्यत्र पिङ्गला दृष्टान्तः, अनारम्भे सारादाने च दृष्टान्तः, योगचर्याप्रयोजनवर्णनम्, वैराग्योपायावधारणम् इत्यादि।

इकाई चतुर्थ-योग दर्शन-3 तृतीय पाद (विभूति पाद) व्यासभाष्य सहित। **(15 घण्टें)**

विषय- धारणा, ध्यान, समाधि व संयम का निरूपण, परिणामत्रय का वर्णन, विभूति वर्णन, उदान, समान प्राण पर संयम करने का प्रतिफल, भूतजय एवं इन्द्रियजय से उत्पन्न सिद्धियों का वर्णन, विवेकज्ञान का स्वरूप एवं कैवल्य योग।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित), प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, सांख्यदर्शन (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित), प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी।

सहायक ग्रन्थ- सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नई सड़क दिल्ली- 110006), सांख्यदर्शन भाष्य (ब्रह्ममुनि जी), वैदिक दर्शन (बलदेव उपाध्याय), वैदिकमुनिभाष्य, सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्दप्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)।

MDPHMJ-302 - सवात्स्यायनभाष्यं न्यायदर्शनम् (तृतीयाध्यायः), सप्रशस्तपादभाष्यं वैशैषिकदर्शनम् (पंचमषष्ठासप्तमाध्यायाः)

क्रेडिट-04
घण्टे-60

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- न्यायदर्शन के तृतीय अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का बोध कराना।
- वैशेषिक दर्शन के पञ्चम, षष्ठ व सप्तम अध्यायों के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना एवं तत्सम्बन्धित प्रशस्तपाद भाष्य का बोध कराना।

परिणाम-

- न्यायदर्शन के तृतीय अध्याय का विस्तृत बोध।
- वैशेषिक दर्शन के पञ्चम, षष्ठ व सप्तम अध्यायों के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का सम्पूर्ण परिचय।

इकाई प्रथम- न्याय दर्शन तृतीय अध्याय- वात्स्यायनभाष्य सहित **(15 घण्टें)**

विषय- इन्द्रियशरीर आदि से व्यतिरक्त आत्मा का निरूपण, आत्मनित्यत्व परीक्षा, शरीर परीक्षा प्रकरण, इन्द्रिय परीक्षा प्रकरण, इन्द्रियनानात्व परीक्षा प्रकरण, अर्थ परीक्षा प्रकरण, मन के अविभुत्व का उपपादन, बुद्धि के आत्मगुणत्व की परीक्षा, आत्मा में इच्छादि गुणों के समवाय का प्रतिपादन, स्मृति के निमित्तों का विवरण, मनः परीक्षा प्रकरण, शरीर की उत्पत्ति में अदृष्ट की कारणता का उपादान।

इकाई द्वितीय- वैशेषिक दर्शन पञ्चम अध्याय- (प्रशस्तपादभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

विषय- पृथ्वी के समान जल तेज और वायु में कर्म, सुखादि की उत्पत्ति के कारण, योग का स्वरूप, मोक्ष का स्वरूप, दिक्काल, आकाश, गुण व कर्म में क्रियाहीनता, कर्म पदार्थ निरूपण, समवायी असमवायी कारण ।

इकाई तृतीय- वैशेषिक दर्शन षष्ठ (प्रशस्तपादभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

षष्ठाध्याय- वेदों में वाक्य रचना ज्ञानपूर्वक, वेदों में दानक्रिया बुद्धिपूर्वक, निषिद्ध भोजन से वैदिक सत्कर्मों द्वारा भी अभ्युदय नहीं, अन्यों को कष्ट देकर प्राप्त उपभोग दोषपूर्ण, समाज में पारस्परिक सहयोग का आधार, मानव में बुराई भलाई, शुचि और अशुचि का स्वरूप, धर्माधर्म प्रकरण, रागद्वेष का कारण, इच्छाद्वेषप्रयत्न प्रकरण, मोक्ष का उपाय।

इकाई चतुर्थ सप्तम अध्याय- (प्रशस्तपादभाष्य सहित) **(15 घण्टें)**

गुण परीक्षा, पाकज प्रकरण, परिमाण परीक्षा, अणुमहत् व्यवहार, परमाणु निरूपण, परिमाण प्रकरण, पृथक्त्व प्रकरण, संख्या प्रकरण, संयोग प्रकरण, विभाग प्रकरण, परत्वापरत्व प्रकरण, समवाय पदार्थ इत्यादि।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- न्यायदर्शन- वात्स्यायनभाष्य सहित, प्रकाशन- चौखम्भा संस्कृत भवन, पोस्ट बाक्स नं.- 1160 चौक, चित्रा सिनेमा के सामने (बैंक ऑफ बड़ौदा बिल्डिंग) वाराणसी-221001, वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश।, प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।, वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश। प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।

सहायक ग्रन्थ- न्यायदर्शन- (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), न्याय दर्शन (डा० राधाकृष्णन्), ढुण्ढिराजशास्त्री, आनन्दभाष्य सहित (आचार्य आनन्दप्रकाश)।

MDPHMJ-303 **सब्रह्ममुनिभाष्यं वेदांतदर्शनम् (तृतीयाध्यायः), शाब्दबोधमीमांसा** क्रेडिट-04

घण्टे-60

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- वेदान्त दर्शन के साधन अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का बोध कराना।
- शाब्दबोध प्रणाली को अवगत कराना।
- उपरोक्त शास्त्रों के प्रमुख संदर्भों को कंठस्थ कराना।

परिणाम-

- वेदांत दर्शन के साधन अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाषार्थ का सम्पूर्ण परिचय।
- शाब्दबोध प्रणाली का परिचय।
- वेदान्त दर्शन व मीमांसा न्याय प्रकाश के प्रमुख संदर्भों का परिचयात्मक ज्ञान।

इकाई प्रथम- वेदान्त दर्शन तृतीय अध्याय - प्रथमपाद (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित) **(15 घण्टें)**

विषय- पूर्व शरीर को छोड़कर जीवात्मा का पुनर्जन्म में सूक्ष्म शरीर के साथ जाना तथा अनुशयानुसार पुनर्देहप्राप्ति, शरीर का अन्त होने पर जीवात्मा का पृथिवी से संयमननामक सातसंख्यावाले पृथिवी के सब ओर वर्तमान मरुद्गण मार्गरूप से तुरन्त गमन और पुनर्जन्मार्थ अन्नादि द्वारा रेत:सेक्तृसम्बन्ध वीर्यरज का योग।

इकाई द्वितीय- वेदान्त दर्शन तृतीय अध्याय - द्वितीयपाद (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित) **(15 घण्टें)**

विषय- जीवात्माा का जाग्रत, स्वप्नादि अवस्थाओं को प्राप्त होना, जीवात्मा में व्याप्त हुए परमात्मा का भी उन अवस्थाओं से सम्पर्क न होना, जहां कहीं परमात्मा की अवस्था का वर्णन है वह विश्वव्यापकता को अभिलक्षित करके आलङ्कारिक ही है। परमात्मा का प्रकाशस्वरूप होना और जीवात्मा में उसके प्रतिबिम्ब का निषेध और जीव के उच्चत्व नीचत्व के साथ संसर्ग न होना, योगाभ्यास से उसकी प्राप्ति और उस समय उसके जीव का तादाम्य सम्बन्ध पुन: तादात्मय को प्राप्त हुए का प्रकाश्यप्रकाशक वाले या व्याप्यवयापक वाले सम्बन्ध से अवस्थित होना। नितान्त अभेदवाद का, विशिष्ट अभेदवाद का निराकरण, परमात्मा से परे कोई इस सन्देह की निवृत्ति, जीवात्मा के लिए परमात्मा का कर्मफल प्रदान करना।

इकाई तृतीय- वेदान्त दर्शन तृतीय अध्याय - तृतीय पाद (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित) **(10 घण्टें)**

विषय- सारी उपनिषदों या अध्यात्मप्रकरणों का ब्रह्म ही एक उपास्य होना, उन भिन्न-भिन्न अध्यात्मप्रकरणों में जो आनन्द आदि भिन्न-भिन्न धर्म परमात्मा के वर्णित किए हैं उनका अन्य स्थान मे तथा परस्पर हेतु की समानता से यथायोग्य उपसंहार और व्यतिहार करना, उस विषय में व्यवस्था भी कि धर्मो का उपसंहार और व्यतिहार होना चाहिए यह भी कहा है। ब्रह्मोपासना से ब्रह्मोपसाना से ब्रह्मवेत्ता विद्वानों का देवयान मार्ग से मोक्ष प्राप्त करना और मोक्ष में जिसका जितना ज्ञान उतना मोक्षानन्द लाभ होना।

इकाई चतुर्थ- वेदान्त दर्शन तृतीय अध्याय - चतुर्थ पाद (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित) **(10 घण्टें)**

विषय- ब्रह्मविद्या के कर्माङ्ग होने का निषेध, चतुर्थाश्रम संन्यास का ब्रह्मप्राप्तयर्थ होना, मुमुक्षुओं का अनिवार्य अनुष्ठान करने योग्य शमदमादि साधन, स्वकीय आश्रम कर्म का सेवन। ऊर्ध्वरेता पद को प्राप्त हुए संन्यासी का फिर निचले आश्रम में अवरोहण न होना, गृहस्थ के लिए असमान्तर कर्म के अनुष्ठान में विकल्प से अनुमति, मोक्षप्राप्ति में अनेक जन्मों का प्रतिबन्ध नही, इस जन्म में भी योग्यता के वश मुक्तिप्राप्ति।

इकाई पंचम- शब्दबोधमीमांसा **(10 घण्टें)**

विषय- शाब्दबोधमीमांसा-विविध दर्शनों के अनुसार।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र), (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित) प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र), (ब्रह्ममुनिभाष्यसहित) प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, शाब्दबोधमीमांसा-वी.ताताचार्य एन.एस.यू तिरूपति।

सहायक ग्रन्थ- वेदान्त दर्शन- ब्रह्ममुनिभाष्य, विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006,

क्रेडिट-04

MDPHMN-304 -वैदिकसाहित्यम्

घण्टे-60

उद्देश्य-

- विद्यार्थियों को वैदिक साहित्य (उपनिषदों एवं श्रीमद्भगवद्गीता) के परिचय के साथ इस के विषय में ज्ञान प्रदान कराना।
- विद्यार्थियों को वैदिक साहित्य (उपनिषदों एवं श्रीमद्भगवद्गीता) में सन्निहित अध्यात्मविद्या तथा सांसारिक व्यवहार की दिव्यता का बोध कराना।
- विद्यार्थियों को वैदिक साहित्य (उपनिषदों एवं श्रीमद्भगवद्गीता) में सन्निहित अनेक (आत्म कल्याण से विश्व कल्याण) विषयों के स्वरूप से अवगत कराना।

परिणाम-

- विद्यार्थी वैदिक साहित्य (उपनिषदों एवं श्रीमद्भगवद्गीता) में सन्निहित विषय से पूर्णरूप से अवगत हो जाता है।
- विद्यार्थी वैदिक साहित्य (उपनिषदों एवं श्रीमद्भगवद्गीता) के गहन अध्ययन से देश काल परिस्थिति में विचलित नहीं होता उस के जीवन में ठहराव आ जाता है।
- विद्यार्थी के जीवन में सुख-शान्ति व दिव्यता का आधान होता है।

इकाई-1

एकादश उपनिषदों का संक्षिप्त परिचय

केनोपनिषद् (प्रथम व द्वितीय खण्ड), कठोपनिषद् द्वितीय बल्ली

(श्रेय-प्रेय मार्ग, विद्या अविद्या, हृदय गुहा में स्थित ओ३म्)

ब्रह्म की सोलह कलाएं (प्रश्नो.), विराट् पुरुष से ही सब कुछ उत्पन्न है। (मुण्डको.)

अन्न की महिमा (तैत्तिरीयो.), ब्रह्मचर्य की महिमा श्वेतकेतु को उसके पिता का

तत्वमसि का उपदेश (छान्दोग्य.)

इकाई-2

श्रीमद्भगवद्गीता का महत्त्व एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगिता

श्रीमद्भगवद्गीता में कर्म का स्वरूप एवं कर्म की अपरिहार्यता

श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मा का स्वरूप

श्रीमद्भगवद्गीता में योग एवं योगी का स्वरूप

इकाई-3

श्रीमद्भगवद्गीता में पाप में प्रवृत्ति के हेतु तथा उससे बचने के उपाय

श्रीमद्भगवद्गीता में यज्ञ का स्वरूप एवं मुक्ति के साधन

श्रीमद्भगवद्गीता में ईश्वर का विराट् स्वरूप ब्रह्माण्ड, क्षेत्र-श्रेत्रज्ञ निरूपण, प्रकृति और पुरुष निरूपण

श्रीमद्भगवद्गीता में गुणत्रयानुरूप कर्त्ता एवं कर्मफल निरूपण

इकाई-4

श्रीमद्भगवद्गीता में दैवासुर संपद विभाग (दैवी एवं आसुरी सम्पदा का परिचय एवं फल)

श्रीमद्भगवद्गीता में तीन प्रकार का आहार एवं तीन प्रकार के सुख

श्रीमद्भगवद्गीता में त्याग का स्वरूप, मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर मनुष्यों के कर्म

श्रीमद्भगवद्गीता में दिव्य लक्ष्य तक पहुँचने के उपाय।

सहायक ग्रन्थ-

श्रीमद्भगवद्गीता गीतामृत, दिव्य प्रकाशन, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार।

एकादशोपनिषद्

MDPHMD-305 (1) - सस्वरवेदपाठः

क्रेडिट-02

घण्टे-30

उद्देश्य-

- वेदों की रक्षा करना।
- वेद, वेदो का विषय और वेदों के ऋषियों से लाभान्वित् होगें।
- वेद पाठ के हर प्रकार के पाठों से अवगत् कराना।
- अक्षरों(वर्णो) उच्चारण का सम्यक बोध कराना।

परिणाम-

- वेद पाठ के प्रकारों (पाठों) का बोध होगा।
- अग्नि,वायु, सस्वर, पाठ एवं अर्थ बोध।
- वैदिक वाङ्मय के विषय मे ज्ञान प्राप्त करेंगे।
- एकाग्रता बढ़ती है, सात्विक हारमोन्स पैदा होने से अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञान का एवं आनन्दमय अस्तित्व पुष्ट एवं प्रसन्न होता है।

इकाई-१ (07 घण्टें)

वैदिक वाङ्मय परिचय

वेदो के ऋषियों, छन्द एवं देवताओं के स्वरूप का परिचय।

वेदों के मुख्य विषयों का परिचय।

वेद पाठ के आठ प्रकार के पाठों (जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वजा, दण्ड, रथ, घन)से अवगत कराना।

मुख्य सूक्तों का परिचय (अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी, बृहस्पति, स्वस्तिवाचन, पुरुषसूक्त, नासदीयसूक्त, शान्तिकरण श्रद्धा, संगठन एवं दिनचर्या मन्त्रों का सस्वर उच्चारण)

इकाई -२ (07 घण्टें)

ऋग्वेदीय अग्नि सूक्त, वायु सूक्त, वागाम्भृणी सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

पुराने पाठ का आवृत्ति।

इकाई -३ (07 घण्टें)

पुरुष सुक्त नासदीय सूक्त, बृहस्पति सूक्त कण्ठपाठ अभ्यास एवं अर्थ सहित व्याख्या।

पुराने पाठ का आवृत्ति।

इकाई -४ (07 घण्टें)

कृष्ण युजर्वेदीय तैत्तीरीय आरण्यक मंत्रपुष्पम् का परिचय।

पुराने पाठ का आवृत्ति।

मन्त्रपुष्पम् का पाठ एवं कण्ठस्थ अर्थ सहित व्याख्या।

स्वस्तिवाचन शांतिकरण एवं दिनचर्यामंत्रो का सस्वर उच्चारण।

संगठन सूक्त के प्रतिदिन एक-एक मंत्र का अर्थ बोध।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वैदिक सुक्त मञ्जरी, मुद्रक-ऋषि ऑफसैट प्रिन्टर्स, ज्वालापुर हरिद्वार।

MDPHMD-305 (2) - भारतीयसंगीतम्बोधः(गानम्)

क्रेडिट–02

घण्टे–30

पाठ्यक्रम उद्देश्य

- पाठ्यक्रम छात्रों को विषय या कौशल के बारे में कौशल ज्ञान और प्रदान करता है.
- पाठ्यक्रम छात्रों को अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने और ज्ञान के प्रति विश्वास बनाने में मदद करता है.
- पाठ्यक्रम छात्रों को समस्याओं की पहचान करने और उनके समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित करता है.

परिणाम :

- पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन.
- शिक्षक सुनिश्चित करते हैं कि पाठ्यक्रम के लक्ष्य स्पष्ट हैं और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रभावी तरीके से मूल्यांकन किया जा सकता है.
- छात्रों के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण मे विकास, जो वे कोर्स को पूरा करने के बाद प्रदर्शित करे.

सैद्धांतिक + क्रियात्मक

यूनिट - 1 भारतीय संगीत का इतिहास

- वैदिक काल
- मध्यकाल
- आधुनिक का

यूनिट 2 सामवेद में सामगान

- प्रकारों का अध्ययन
- उदगाता, प्रस्तोता, प्रतिहर्ता
- उदात्त, अनुदात्त, स्वरित

यूनिट -3 भरत मुनि कृत नाट्यशास्त्र संक्षिप्त अध्ययन

- 28 से 33 अध्याय

यूनिट - 4 शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर संक्षिप्त अध्ययन

- स्वराध्याय
- रागाध्याय
- प्रकीर्णाध्याय
- तालाध्याय
- वाद्याध्याय
- नर्तनाध्याय

निर्धारित पाठ्यपुस्तक-

MDPHMD-305 (3) - भारतीयनृत्यबोधः(भरतनाट्यम्) क्रेडिट–02

Duration: 1 semester घण्टे–30
Mode: Practical + Theory
Course Name- Introduction of Bharatanatyam

Objective:

- To introduce students to the foundational elements of Bharatanatyam through a balanced blend of practical and theoretical training. The course aims to:
- Develop proper body posture, movement control, and rhythm awareness.
- Teach basic adavus (steps), mudras (hand gestures), and short dance sequences.
- Cultivate understanding of key theoretical concepts such as abhinaya, mudras, tala (rhythm), and the historical and cultural background of Bharatanatyam.
- Familiarize students with classical dance terminology and significant contributors to the art form.
- Prepare students to confidently perform short Bharatanatyam items with grace and understanding.

Outcome:

- Focus on building strong basics.
- Teach body control, rhythm sense, hand gestures.
- Provide simple historical, technical, and theoretical knowledge.
- Prepare students for performing small items confidently.

1- PRACTICAL

- **Namaskaram**
- **Besic Posture**:
  - Samapadam (Straight posture)
  - Araimandi (Half-sitting position)
  - Murumandi (Full sitting position)
- **Adavu**
  - Tatta Adavu (3 speeds)
  - Natta Adavu (3 speeds)
  - Sarikkal Adavu (3 speeds)
  - Teermanam Adavu
  - Parval adavu
  - Tattimetti adavu
  - Kuditamitta Adavu
- **Hast Mudras:**
  - 05Asamyukta Hasta Viniyoga (Single hand gestures)
  - 10 Samyukta Hasta Viniyoga (Double hand gestures)
  - Dhyan Shloka, Shiro Bheda, Drishti Bheda, and Greeva Bheda According to Abhinaya Darpanam
- Short **Korvais** (small step sequences combining adavus).

THEORY CONTENT (Dance Knowledge)

- History and Evolution:
  - From temples to stage
  - Importance of Bharatanatyam in Indian culture
- Brief about famous figures (Smt. Rukmini Devi Arundale, and Smt.T. Balasaraswati)

Basic Dance Terminology

- Adavu: Definition and importance
- Mudra: Role in expression
- Abhinaya: Meaning and types (only basic 4 types)
- Natya, Nritya, Nritta: Definition

Hand Gestures (Hasta Mudras)

- Importance of Hasta Mudras in dance

- Introduction to Asamyukta and Samyukta Hastas.

  Rhythm (Tala) Basics

  Brief introduction of South Indian Taal System .

  Simple Talas used in basic compositions (Rupak and Aadi Talam)

  Concept of Laya (tempo: slow, medium, fast)
- Understanding the Dance Sequence (Margam)
- Preparation for short assignments

Bhartiya Natya parampara evam abhinayadarpana by Vachaspati gairola

MDPHMD-305 (4) - भारतीयनृत्यबोधः(कथकनृत्यम) [Introduction of Kathak]

क्रेडिट–02

घण्टे–30

Learning Objective

1. Provide foundational knowledge of Kathak technique, history and aesthetics.
2. Develop basic body alignment, posture, hand movements and footwork.
3. Introduce the student to taal structure, layakari and Kathak repertoire.
4. Build confidence in stage performance, expression and classroom discipline.
5. Nurture sensitivity towards Indian cultural values and the guru–shishya learning tradition.

Learning Outcomes

1. Demonstrate basic tatkaar and bhramari with correct posture and rhythm.
2. Present elementary nritta sequences with understanding of taal and laya.
3. Identify Gharanas, repertoire parts and basic terminologies of Kathak.
4. Perform a short Vandana / Thumri / Gat-Bhava with introductory Abhinaya.
5. Integrate theoretical learning into practical performance and classroom discipline.

Course Structure

Unit	Content Focus
Unit 1 (Theory)	Introduction to Indian Classical Dance system; origin and development of Kathak; contribution of temple & court tradition to the evolution of Kathak.
Unit 2 (Theory)	Basic Kathak terminology – Nritta, Nritya, Natya, Taal, Laya, Matra, Theka; Introduction to Gharanas – Lucknow, Jaipur & Banaras (distinctive features); Repertoire components – Thaat, Aamad, Tatkaar, Tihai, Chakri, Gat.
Unit 3 (Practical)	Body conditioning, posture, torso & hand movement alignment; Eye & neck exercises; Basic Tatkaar (single, dugun, chaugun); Teentaal padhant and theka recitation; Thaat + Aamad + simple Toda–Tukda + Tihai.
Unit 4 (Practical)	Chakkars (slow and madhya laya), Vandana / Krishna / Shiva / Devi presentation OR basic Gat–Bhava; Stage discipline, padhant, salutation, basic costume and stage presence.

Assessment Pattern (As per NEP)

Component	Weightage
Theory (Written / Viva)	30%
Practical Internal	20%
Final Practical Performance	50%

Detailed Study Material (Reference Books)

Title	Author	Publisher	Place	Year
Kathak Darpan	Pt. Birju Maharaj	Arya Book Depot	New Delhi	1994
Natyashastra (Selected Chapters)	Bharat Muni	Munshiram Manoharlal Publishers	New Delhi	2018 (Reprint)
Kathak Nritya Ka Itihas	Dr. Puru Dadheech	Lokbharti Prakashan	Allahabad	2001
Nritya Sarvasva	Pt. Rohini Bhate	Sharada Prakashan	Pune	1998

Title	Author	Publisher	Place	Year
Abhinaya Darpan	Nandikeshwar	Khemraj Shrikrishnadas Publishing	Mumbai	2010 (Reprint)
Indian Classical Dance: Tradition in Transition	Kapila Vatsyayan	Abhinav Publications	New Delhi	1977

MDPHRE-306 - Reaserch Medothology

क्रेडिट-04

घण्टे-60

पाठ्यक्रम के उद्देश्यः-

- विद्यार्थियों को शोध की विषयवस्तु, प्रक्रिया एवं पद्धति के बारे में अवगत कराना।
- शोध के महत्व एवं लाभ के सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध कराना।
- दार्शनिक, सामाजिक एवं नैतिक क्षेत्र में शोध के लिए प्रेरित करना।

परिणामः-

- शोध की प्रक्रिया, शोध की पद्धति एवं विषयवस्तु के बारे में आनुभविक ज्ञान प्राप्त होगा।
- शोध के विभिन्न प्रकार के लाभ एवं महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त कर उसे व्यवहारिक रूप में अपनाने में सहायता प्राप्त होगी।
- विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण विषयों पर शोध करने का अवसर प्राप्त होगा जिससे वे उपयोगी एवं प्रांसगिक विषयों पर लघु शोध लिख सकेगें।

इकाई १ शोध का अर्थ, परिभाषा एवं परिचय (20 घण्टें)

- अनुसंधान का स्वरूप, शोध का तात्पर्य एवं परिभाषा, शोध के प्रकार- शुद्ध शोध, व्यवहारपरक शोध।
- शोध के उद्देश्य, व्यवहारपरक शोध या मनोवैज्ञानिक शोध का क्षेत्र
- वैज्ञानिक ज्ञान और वैज्ञानिक विधि, वैज्ञानिक ज्ञान का स्वरूप या विशेषतायें
- साधारण ज्ञान तथा वैज्ञानिक ज्ञान में अन्तरज्ञान-अर्जन की विधियाँ, तथ्य, परिकल्पना, सिद्धांत और नियम

इकाई २ शोध-प्रक्रिया, शोध प्रक्रिया में निहित अवस्थायँ (20 घण्टें)

- शोध समस्या, परिचय, साहित्य समीक्षा, परिकल्पना
- अध्ययन-विधि, पायलट अध्ययन, परीक्षण संचालन और प्रदत्त संग्रह
- परिणाम एवं विवेचन
- शोध में नैतिक समस्याएँ एवं सिद्धान्त

इकाई ३ शोध-अभिकल्प, प्रदत्त-संग्रह प्रविधिः साक्षात्कार, शोध में नैतिक समस्याएँ एव सिद्धान्त (20 घण्टें)

- शोध-अभिकल्प के सिद्धान्त
- प्रदत्त-संग्रह प्रविधिः साक्षात्कार
- सन्दर्भ ग्रन्थ सूची, शोध की रिपोर्ट तैयार करना

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- Research Methodology: Ranjeet Kumar Publisher Pearson Education India 2005.

MDPHVA-307 - प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्-III

घण्टे-180

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Basic Preparatory Asanas as per previous semester

(Sukshma asana, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar)

Unit-1: Asanas

Yogamudrasan, Supta Padmasan, Mandukasan, Shashakasan, Janushirasan, Marichayasan, kurmasan, Merudandasan, Vrishabhasan, Konasan, Trikonasan, Ardha Parshvottanasan, Parshvottanasan, Uttan Padasan, Naukasan, Jatharasan, Viparit Naukasan, Shalabhasan & Previous semester asanas.

Unit-2: Advance Yogasanas

Purna Shalabhasan, Gand Bherundasan, Supta Dimbasan, Supta Trivikramasan, Kokilasan, Bakasan, pratyanchasan, Tandavasan, Pashasan, Vishwamitrasan, & Previous semester asanas

Unit-3: Shatkarma (Shuddhi Kriya)

Sutra Neti, Dand Dhauti, Vastra Dhauti, Nauli, Sheetkram Kapalbhati & previous semester practices

Unit-4: Pranayam & Mediatation

8 Pranayam as per the protocol of PYP & previous semester practices

Ashta Chakra Dhyan (Nabhi-Chakra Dhyan, Kanthakoop Dhyan, Hriday Dhyan, Ajna Chakra Dhyan, Gayatri Dhyan)

Text Book: -

4) Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
5) Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
6) Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

Reference Book: -

5) Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.
6) Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.
7) Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.

पतञ्जलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार

क्रेडिट-05

एम.ए. दर्शन

घण्टे-75

द्वितीय वर्ष (चतुर्थ सेमेस्टर)

MDPHMJ-401 - सव्यासभाष्यं योगदर्शनम् (कैवल्यपादः), सब्रह्ममुनिभाष्यं सांख्यदर्शनम् (पंचमषष्ठाध्यायौ)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- सांख्यदर्शन के परपक्षनिर्जयाध्याय व तन्त्राध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ को जानना।
- योगदर्शन के कैवल्यपाद के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- उपरोक्तर शास्त्रों के प्रमुख संदर्भों को कण्ठस्थ कराना।

परिणाम-

- सांख्यदर्शन के परपक्ष निर्जयाध्याय व तन्त्राध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।
- योगदर्शन के कैवल्यपाद के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।
- सांख्यदर्शन व योगदर्शन के प्रमुख संदर्भों का विवरण।

इकाई प्रथम- सांख्य दर्शन पञ्चम् अध्याय (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(18 घण्टें)**

विषय- असंग परमेश्वर का अविद्या शक्ति के साथ सम्बन्ध असंभव, धर्माधर्म के प्रमाण का कथन, सुखादि की सिद्धि में अनुमान के पञ्चावयव का प्रयोग, वेदों के पौरुषेयत्व का खण्डन एवं स्वतः प्रामाण्य व्यवस्थापन, स्फोटवाद का खण्डन।

इकाई द्वितीय- आत्मानात्म अभेद में बाधक कथन, आनन्द आत्मा का स्वरूप है इसका खण्डन, परमाणु के नित्यत्व का खण्डन, इन्द्रियों के अभौतिकत्व का व्यवस्थापन, समाधि, सुषुप्ति और मोक्ष की एकरूपता, भूतचैतन्यवाद का खण्डन। **(18 घण्टें)**

इकाई तृतीय- सांख्य दर्शन षष्ठ अध्याय (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(18 घण्टें)**

विषय- दुःखनिवृत्तिमात्र ही पुरुषार्थ है, बन्ध और मोक्ष के कारण का निरुपण, योग साधना का वर्णन, पुरुष बहुत्व व्यवस्थापन, उपाधि भेद से बन्ध-मोक्ष व्यवस्था का खण्डन, प्रकृति पुरुष का भोग्य भोक्तृभाव का अनादित्व स्थापना।

इकाई चतुर्थ - योग दर्शन चतुर्थ पाद (कैवल्य पाद) व्यासभाष्य सहित **(18 घण्टें)**

विषय- समाधि के प्रकार, चतुर्विध कर्म, हेतु फल आश्रय के आलम्बन के अभाव से दोषों का अभाव, धर्ममेघ समाधि का स्वरूप, क्लेश कर्म, निवृत्ति व उसका फल, गुणों की परिसमाप्ति, कैवल्य योग ।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- सांख्यदर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, सांख्यदर्शन (विज्ञानभिक्षुभाष्य सहित)प्रकाशन- चौखम्भा प्रकाशन, पोस्ट बाक्स नं.- 1150 के. 37/116, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी-221001, पातञ्जलयोगदर्शनम् (व्यासभाष्यसहित), डॉ. सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य शास्त्री चौखम्बा, सुरभारती, वाराणसी।

सहायक ग्रन्थ- सांख्यदर्शन-विद्योदय भाष्य सहित, (आचार्य उदयवीर शास्त्री-प्रकाशक-विजयकुमार हासानन्द- 4408, नईसड़क दिल्ली- 110006), दयानन्द दर्शन (स्वामी सत्यप्रकाश) अनुवादक रूपचन्द दीपक, सांख्यदर्शनभाष्य (ब्रह्ममुनि जी), वैदिक दर्शन (बलदेव उपाध्याय), वैदिकमुनिभाष्य, सांख्यदर्शन - (आचार्य आनन्दप्रकाश), भोजवृत्ति - (महाराज भोजदेव)।

MDPHMJ-402 - सवात्स्यायनभाष्यं न्यायदर्शनम् (चतुर्थाध्यायः), सप्रशस्तपादभाष्यं वैशैषिकदर्शनम् (अष्टमनवमदशमध्यायाः)

क्रेडिट-05

घण्टे-75

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- न्यायदर्शन के चतुर्थ अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- वैशेषिक दर्शन के अष्टम, नवम् तथा दशमाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना, साथ ही तत्सम्बन्धित प्रशस्तपाद का बोध कराना।
- उपरोक्त शास्त्रों के संदर्भों को कण्ठस्थ कराना।

परिणाम-

- न्यायदर्शन के चतुर्थ अध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का परिचय।
- वैशेषिक दर्शन के अष्टम, नवम् तथा दशमाध्याय के सूत्रार्थ व भाष्यार्थ का परिचय।
- वैशेषिक दर्शन के अष्टम्, नवम् तथा दशमाध्याय के प्रशस्तपाद का परिचय।
- न्यायदर्शन व वैशेषिक दर्शन के प्रमुख संदर्भों का वाचन।

इकाई प्रथम- न्याय दर्शन चतुर्थ अध्याय (वात्स्यायनभाष्य सहित) **(18 घण्टें)**

विषय- दोष व प्रेत्यभाव परीक्षण, शून्यतोपादानप्रकरण, ईश्वरोपादान प्रकरण, आकस्मिकत्व प्रकरण, सर्व अनित्यवाद व सर्वनित्यत्ववाद संख्यैकात्तवाद प्रकरण, फल परीक्षा प्रकरण, दुख परीक्षा प्रकरण, अपवर्ग परीक्षा प्रकरण।

इकाई द्वितीय- न्याय दर्शन चतुर्थ अध्याय (वात्स्यायनभाष्य सहित) तत्वज्ञानोत्पत्ति प्रकरण, अवयवायवयी प्रकरण, परमाणु निरवयवत्व प्रकरण, बाह्यर्थभङ्ग निराकरण प्रकरण, तत्वज्ञानपरिपालन प्रकरण। **(18 घण्टें)**

इकाई तृतीय- वैशेषिक दर्शन अष्टम (प्रशस्तपादभाष्य सहित) **(18 घण्टें)**

विषय- आत्मा और मन अप्रत्यक्ष, ज्ञानोत्पत्ति कैसे?, सामान्य विशेष के ज्ञान से द्रव्यादि का ज्ञान, ''अर्थ'' शब्द वाच्य द्रव्य, गुण, कर्म, घ्राण का उपादन पृथ्वी।

इकाई चतुर्थ- वैशेषिक दर्शन नवम एव दशम अध्याय (प्रशस्तपादभाष्य सहित) **(18 घण्टें)**

विषय- अभाव का स्वरूप, अभाव का प्रत्यक्ष, लैङ्गिक ज्ञान व शब्द ज्ञान का विवरण, स्मृतिज्ञान के कारण, संस्कार प्रकरण, अविद्या के कारण व उसका स्वरूप, विद्या का स्वरूप, सुख दुःख का विवेचन, ज्ञानादि से अतिरिक्त आत्मगुण हैं, सुख-दुःख प्रकरण, समवायी, असमवायी कारण, दृष्ट-अदृष्ट पदार्थ का ज्ञान एवं प्रयोग, अभ्युदय का प्रयोजक ।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वैशेषिक दर्शन- (प्रशस्तपादभाष्य सहित), आनन्द प्रकाश। प्रकाशक- आर्ष शोध, संस्थानम्, आलियाबाद, मं. शमीरपेट, जि.- रंगारेड्डि, तेलंगाना।, न्यायदर्शन (डा० राधाकृष्णन्), न्यायवार्तिक (वाचस्पति मिश्र), ढुण्ढिराजशास्त्री।

सहायक ग्रन्थ- न्यायदर्शन- (विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), (आचार्य उदयन) (विद्योदयभाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री), आनन्दभाष्य सहित (आचार्य आनन्दप्रकाश)।

MDPHMJ-403 - सब्रह्ममुनिभाष्यं वेदांतदर्शनम् (चतुर्थाध्यायः), अर्थसंग्रहः

क्रेडिट-04

घण्टे-60

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :-

- वेदान्त दर्शन के फलाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ से अवगत कराना।
- उपरोक्त शास्त्रों के सन्दर्भों को कण्ठस्थ कराना।

परिणाम-

- वेदान्त दर्शन के फलाध्याय के सूत्रार्थ एवं भाष्यार्थ का सम्पूर्ण परिचय।
- वेदान्त दर्शन व मीमांसा दर्शन के प्रमुख सन्दर्भों का प्रामाणिक ज्ञान।

इकाई प्रथम- वेदान्त दर्शन चतुर्थ अध्याय - प्रथमपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(12 घण्टें)**

विषय- एकाग्रता के साधनभूत आसन आदि सेवन कर यावज्जीवन परमात्मा के ध्यान का अनुष्ठान करना। प्रतीकोपासना का निषेध, उपासना से परमात्मसाक्षात्कार हो जाने पर पाप के सम्पर्क का अभाव और तब पुण्य-पाप कर्मों के फलप्रदान का अवसर नहीं। आरम्भ हुए फल वाले पुण्य-पाप कर्मों की भोग से निवृत्ति।

इकाई द्वितीय- वेदान्त दर्शन चतुर्थ अध्याय - द्वितीयपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(12 घण्टें)**

विषय- मरणसमय इन्द्रियशक्तियों का सूक्ष्म शरीर में अन्तर्लीन हो जाना, नष्ट हुए स्थूल शरीर के साथ सूक्ष्म शरीर का नाश नहीं किन्तु जीवात्मा से साथ ही यहां से निष्क्रमण और मोक्ष हो जाने तक साथ रहना। स्थूल शरीर में स्थित उष्मा-उष्णता का निमित्त सूक्ष्म शरीर, स्थूल शरीर के नष्ट हो जाने पर प्राणों का जीवात्मा के साथ जाना और शक्तिरूप के साथ रहना। हृदय से मूर्धा को प्राप्त हुई नाड़ी से ब्रह्मोपासाक विद्वान् की शरीर से उत्क्रान्ति और रश्मियों का अनुसरण कर ब्रह्मलोकगमन।

इकाई तृतीय- वेदान्त दर्शन चतुर्थ अध्याय - तृतीयपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(12 घण्टें)**

विषय- ब्रह्मोपासाक विद्वानों का शरीर से उत्क्रमण के अनन्तर अर्चि आदि से युक्त देवयान मार्ग द्वारा ब्रह्मलोक के प्रति जाना, उस समय दोनों ज्ञान कर्मेन्द्रियों की शक्तियों के सम्मूर्च्छित हो जाने से अर्चि आदि मार्ग-क्रमों से प्रेरे जाते हुओं का ब्रह्म के प्रति गमन।

इकाई चतुर्थ - वेदान्त दर्शन चतुर्थ अध्याय - चतुर्थपाद (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) **(12 घण्टें)**

विषय- मुक्ति में सूक्ष्म शरीर का वर्तमान होना और स्वप्न जैसा व्यवहार, वहां मुक्त का ब्राह्मधर्म से या निजचैतन्यरूप से अवस्थित रहना तथा जगद्व्यापाररहित साङ्कल्पिक ऐश्वर्य का उद्भव उस ऐश्वर्य की मोक्ष से निवृत्ति होने में असमर्थता और ब्रह्म के साथ उसके आनन्द ज्ञान आदि भोग की समानता।

इकाई पंचम- अर्थ संग्रह **(12 घण्टें)**

विषय- विधि एवं अर्थवाद, श्रुति, लिंग, वाक्य, प्रकरण, स्थान व समाख्या की समीक्षा। तन्त्र निरूपण, आवाप निरूपण व प्रसंग निरूपण समीक्षा।

निर्धारित पाठ्यपुस्तक- वेदान्त दर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), वेदान्त दर्शन (ब्रह्ममुनिभाष्य सहित) प्रकाशक- माता तुलसादेवी हुकमचन्द्र धर्मार्थ आर्ष साहित्य प्रकाशन, हिसार, (हरियाणा), अर्थ संग्रह- श्रीलौगाक्षिभास्कर कामेश्वरनाथ मिश्र, हिन्दी व्याख्याकार चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

सहायक ग्रन्थ- वेदान्त दर्शन- वैदिकमुनिभाष्य, (विद्योदय भाष्य सहित आचार्य उदयवीर शास्त्री, प्रकाशक-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली-110006), ब्रह्ममुनिभाष्य, अर्थसंग्रह- (लौगाक्षि भास्कर)।

MDPHRE-404 - पाण्डुलिपि विज्ञान Manuscriptology

क्रेडिट–04

घण्टे–60

MDPHRE-405 - Project/Dissertation

क्रेडिट–04

घण्टे–60

Objectives

- To aware the students about importance of research and to develope various perception and ideas on the relative subject.
- To the students about research and its process to get qulatative research work.
- To aware the students for learning different paramteras for doing research work.

Outcomes

- Students will apply the process and method while doing research.
- Students will be able to upgrade their knowledge thourg participating the saminars, workshops and conferences.

Unit-I (30 घण्टें)

- Introduction to Project and Dessartation.
- Introduction to Research Journals

Unit-II (30 घण्टें)

- Research Papers (Three research papers are compulsory in Peer Revised journals)
- Seminars (Three Paper presentation are compulsory in Seminars/Confrences)

Reference Book

- Research Methodology: Ranjeet Kumar Publisher Pearson Education India 2005.

MDPHVA-406 प्रयोगात्मकं योगविज्ञानम्-X घण्टें-180

Objectives: Following the completion of the course, students shall be able to:

- Understand the benefits, contraindications and procedure of all practices.
- Demonstrate each practice with confidence and skill.
- Explain the procedure and subtle points involved.
- Teach the yoga practices to any given group.

Unit-1: Basic Preparatory Asanas

Sukshma Yogic vyayam, Yogic jogging, Dand Baithak, Surya Namaskar

Unit-2: Asanas

Dvipada Skandhasana, Purna Bhujangasana, Purna Matsyendrasana, Pakshee Aasan, Vrishchik Aasana, Padma Mayurasana, Purna Vrishchikasana, Padma Sheershasana,Karnapidasana, Purna Dhanurasana, Gorakshasana,

Purna Chakrasana, Purna Shalabhasana, Ek Pada Bakasana, Omkar Aasana, Purna Natarajasana

And all the practices of previous semesters.

Unit-3: Advance Yogasanas

Ashtanga & Vinyasa series, Aerial Yoga, Yoga with other props

Unit-4: Shatkarma (Shuddhi Kriya)

Danddhauti,Vastrdhauti, Nauli, Tratak

Unit-5: Pranayam & Mudra

8 Pranayam as per the protocol of PYP & previous semester practices

Hasta Mudra: Apan Mudra, Apan Vayu Mudra, Surya Mudra, Varun Mudra, Linga Mudra, Dharana Shakti Mudra

Meditation: - Pranav Meditation

Text Book: -

7) Ramdev, S., (2022), Yoga Sadhna Evam Yoga Chikitsa Rahasya. Divya Prakashan.
8) Balkrishna A., (Under Publication), Yoga Vishwakosh. Divya Prakashan
9) Ramdev S., (2009), Pranayam Rahasya. Divya Prakashan.

Reference Book: -

8) Balkrishna A., (2017), Yoga Vijnanam: Yoga ke goorh rahasyo ka darshanik v vaijnanik vivechan (first edition). Divya Prakashan.
9) Balkrishna A., (2007), Vijnan ki Kasauti Par Yoga (first edition). Divya Prakashan.
10) Research Publication by Patanjali Research Foundation, Divya Prakashan.

विषय विशेषज्ञ	विषय विशेषज्ञा	विभागाध्यक्षा
प्रो. ब्रजभूषण ओझा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	प्रो. शिवानी वी. डीन-शास्त्रसंकाय कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बैंगलुरू	प्रो. साध्वी देवप्रिया दर्शन विभाग पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार